आरती श्री रामचन्द्रजी

श्री रामचन्द्र कृपालु भज् मन, हरण भवभय दारुणम् ।
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

कन्दर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रूचि-शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

भज् दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द्र दशरथ नन्द्रम् ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप-धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

इति वदति तुलसीदास, शंकर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम् ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

मन जाहि राचेऊ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय हित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम् ।